मोक्ष मार्गस्य नेत्तारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्
ज्ञातारं विश्वतत्वानां वन्दे तद्गुण लब्धये।।
तत्त्वार्थ सूत्र ग्रंथराज में स्वाध्याय के माध्यम से षष्ठम् अध्याय चल रहा है। कर्मों के आस्रव के लिए जो परिणाम विशेष होते हैं, उन परिणामों का कथन चल रहा है। पहले कल दर्शन मोहनीय कर्म के आस्रव के विषय में सूत्र पढ़ा गया था।

Class 19

चारित्र मोहनीय कर्म संयम ग्रहण नहीं करने देता है
आज दर्शन मोहनीय के आगे चारित्र मोहनीय जो कर्म होता है उसके विषय में बताया जा रहा है। दो प्रकार के कर्म हैं- मोहनीय कर्म में- एक दर्शन मोहनीय और एक चारित्र मोहनीय। जो दर्शन मोहनीय कर्म होता है वह हमारे सम्यक्त्व का, सच्ची श्रद्धा का घात करता है। उस कर्म के कारण से सही चीजों पर सही श्रद्धा नहीं बन पाती। यह भी हमारे दर्शन मोहनीय कर्म के उदय के कारण से होता है। उसी के साथ-साथ एक चारित्र मोहनीय कर्म होता है, जो हमें संयम मार्ग पर आगे नहीं बढ़ने देता। जिन कर्मों के कारण से हमारे ही चारित्र गुण का घात होता है। आत्मा में जिस तरह से सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र ये तीनों गुण हैं, इन गुणों का घात करने वाले भी अलग-अलग कर्म होते हैं। अतः सम्यग्दर्शन का घात करने वाला दर्शन मोहनीय है, तो सम्यग्चारित्र का घात करने वाला चारित्र मोहनीय कर्म है। इस चारित्र मोहनीय कर्म का आस्रव कैसे होता है? किन कारणों से यह बंध को प्राप्त होता है? यहाँ कहा जाता है।

कषायो-दयात्तीव्र-परिणामश्चारित्र-मोहस्य।।**1.14**।।

चारित्र मोहनीय कर्म के लिए आस्रव के लिए कारण हैं- कषाय के उदय से तीव्र परिणाम का होना। कषाय का उदय होना जरूरी है। यूँ तो कषाय का उदय सब में रहता है लेकिन कुछ विशेष रूप से कषाय का उदय ऐसा होना जिससे कि हम अपने ही चारित्र को घात करने वाली कोई प्रवृतियाँ करें, वह यहाँ पर कषाय के उदय से लिया जाता है। ऐसा कषाय का उदय जिसके माध्यम से हमारे परिणामों में तीव्रता आ जाए। हमारे भाव ज्यादा तीव्र हो जाएँ यानि कषाय का उदय जो एक सामान्य से चलता रहता है, वह अलग चीज है और

विशेष रूप से जो बंध का कारण है- चारित्र मोहनीय, कर्म जिससे विशेष रूप से बंधता है या चारित्र का जो प्रतिबंधक है वह परिणाम तीव्र परिणाम होते हैं और वह तीव्र परिणाम कषाय के उदय से ही होते हैं। यानि कषाय में चारित्र को घात करने की एक विशेषता है। अन्यत्र भी आचार्यों ने लिखा है समयसार जी आदि ग्रंथ में -

चारित्तम् पणिमित्तम् कषायदो होंति परिणाम:
चारित्र के जो प्रतिनिबद्ध परिणाम हैं वे कषाय से होते हैं यानि कषाय ही चारित्र का प्रतिबंधक हैं, चारित्र को घात करती है। हर आत्मा के स्वाभाविक परिणाम के विपरीत जो वैभाविक परिणाम होता है, वह वैभाविक परिणाम कर्म के उदय से होता है और उस वैभाविक परिणाम को जान कर के हम उसे control कर सकते हैं। कषाय के उदय से जब तीव्र परिणाम होगा तो वह तीव्र परिणाम चारों प्रकार के कषायों रूप होगा।

कषायों के उदय होने पर तीव्र परिणामों से चारित्र गुण का घात होता है
किसी के लिए क्रोध-कषाय के उदय में तीव्र परिणाम होगा, किसी के लिए मान कषाय के उदय में तीव्र परिणाम होगा, किसी के लिए माया कषाय जन्य तीव्र परिणाम होगा और किसी के लिए लोभ कषाय जन्य तीव्र परिणाम होगा। इन कषायों का जब उद्वेग अधिक होता है तब जो हमारे भावों में, परिणामों में जो उसकी intensity बढ़ जाती है, वह ही हमारे चारित्र गुण का घात करती है। कषाय जो क्रोध रूप है, मान रूप है, माया रूप है और लोभ रुप है ये चार तो कषाय कहलाती हैं। इन चार कषायों के माध्यम से जो आस्रव होगा, वह कषाय वेदनीय कर्म कहा जाता है। चारित्र मोहनीय में भी इसको क्या बोलते हैं? कषाय वेदनीय। इसके साथ वेदनीय शब्द भी जोड़ा जाता है क्योंकि वेदनीय इसलिए है क्योंकि इसका हम वेदन भी करते हैं, इसका हम अनुभवन भी करते हैं, यह हमारे वेदन करने में आता है।

क्रोध कषाय
अगर हम तीव्र क्रोध कषाय का परिणाम करते हैं तो हमें महसूस होता है कि हम गुस्सा कर रहे हैं। तीव्र क्रोध कषाय के साथ में हम किसी जीव का जो भी घात करते हैं, किसी के लिए

हम हानि पहुँचाने का विचार करते हैं, तीव्र क्रोध कषाय में हम किसी को किसी भी तरीके से नुकसान पहुँचाते हैं तो वह हमारे लिए पकड़ में आता है। इसलिए यह क्रोध कषाय रूप परिणाम यह वेदनीय के साथ में जोड़ कर के कहा जाता है मतलब कषाय वेदनीय कर्म है।

मान कषाय

इसी तरीके से मान कषाय की तीव्रता में भी पाप होता है। मान कषाय के कारण से व्यक्ति बड़े-बड़े झूठ बोलता है, बड़े-बड़े अनर्थ कर लेता है और कभी-कभी तो मान कषाय के कारण से व्यक्ति इतना बड़ा-बड़ा कर्जा ले लेता है अपने ऊपर कि उसी को वह उतार नहीं पाता और अपना घात करने के लिए भी मजबूर हो जाता है यह भी मान कषाय के परिणाम में होता है।

माया कषाय

मायाचारी के परिणाम में जो तीव्र परिणाम होते हैं, उसके कारण से हमेशा दूसरों को ठगने का भाव रखना, दूसरों के साथ कैसे छल कपट करें? दूसरों के धन संपत्ति कैसे हड़पी जाए? जमीन-जायदाद कैसे अपने कब्जे में कर ली जाए? इस तरीके के जो छल-कपट के परिणामों से हमेशा मन में आस्रव होता है। वह भी चारित्र कभी लेने नहीं देता ।

लोभ कषाय

इसी तरीके से लोभ की तीव्रता से जो भी हमें बाहरी परिग्रह है, उस परिग्रह के प्रति मेरे पन का भाव बड़ा तीव्र होता है। जिसके कारण से वह कुछ भी थोड़ा भी छोड़ नहीं पाता। किसी भी चीज का परिग्रह का कोई भी मर्यादा भी नहीं बना पाता और तीव्र लोभ के कारण से वह हर पदार्थ से ममपने का भाव रखता है। उस तीव्र कषाय परिणाम के कारण से भी चारित्र मोहनीय कर्म का आस्रव होता है। इस तरह से यह चार तो कषाय हैं। इनका वेदन तीव्र परिणामों के साथ हम निरंतर करते हैं।

नोकषाय भी आस्रव के कारण हैं

इसी के साथ-साथ आचार्यों ने इन कषायों में नोकषायों का वर्णन भी किया है। हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुत्सा, स्त्री वेद, पुरुष वेद और नपुंसक वेद। यह नोकषायों के भी आस्रव के कारण बताए जाते हैं। यद्यपि कषायों की तीव्रता होने पर ही नोकषाय में तीव्रता आती है। नो कषाय अपने आप से तीव्र परिणाम रूप नहीं हो पाती लेकिन कषाय जो है इन नोकषायों का सहारा ले करके अपनी कषायों को और तीव्र कर लेती है।

हास्य कषाय

हास्य के लिए भी अलग से आस्रव का कारण बताया है। हास्य का मतलब यह है कि ऐसे वचन बोलना जो कि आप लोग देखते हैं, बच्चे लोग आपस में कई बार भद्दी मजाक करते हैं। वह भद्दी मजाक या कोई भी असभ्य वचन या बिना बात के भी कोई गलत sense में बात कह कर के हंस लेना यह हास्य कर्म के आस्रव का कारण होता है। एक तो यह होता है, जो सामान्यतया देखने में आता है। जो लोग इस तरह से हास्य करते हैं तो आपके मन में यह भी विचार आ सकता है कि यह तो अच्छी बात है हास्य कर्म का आस्रव होगा तो हम हँसते ही रहेंगे। हँसना जो होता है यह भी एक कषाय का रूप होता है तो यह हमारे लिए घातक होता है। यह घातक किस रूप में होता है? अगर हमने इन कषायों का ऐसे हास्य का बंध किया तो फिर हो सकता है कि जिसे हम बोलते हैं- जगहंसाई। हम किसी दूसरे के ऊपर हँसे अब हमारे लिए ऐसे कर्म का बंध हो गया कि पूरी दुनिया हमारे ऊपर हँसे। कहे कि देखो! बड़ा होशियार बनता था, जगहंसाई होने लग जाती है। यह कर्मों का फल इस रूप में मिलता है। अतः इसलिए एक तो यह जो लौकिकता में हास्य नाम का जो नोकषाय है, जिसके कारण से दूसरों के ऊपर हंसा जाता है या दीन-दुखियों के ऊपर हँसना इससे विशेष कर्मों का आस्रव होता है अथवा जो तपस्वी हैं, व्रती हैं इनके ऊपर हंसना इससे भी विशेष कर्म का आस्रव होता है।

प्रसन्न भी सावधानीपूर्वक रहें हँसाने से भी कर्म का आस्रव होता है

जो जग हंसाई होती है वह इसी कारण से होती है कि हमने कभी किसी तपस्वियों की, व्रतियों की, जो है किसी तरह से हंसी मजाक की। उनकी किसी भी तरह की प्रवृत्ति को देख करके दूसरों के साथ मतलब कहना चाहिए अपनी भाषा में मजा लिया, खूब हंसा, मजा लिया। ये सब चीजें जब कर्म का बंध कर लेती हैं तो उस व्यक्ति के साथ भी फिर उसी तरह

से होता है। हास्य का मतलब इस तरह से है। वैसे प्रसन्न रहना एक अलग बात है लेकिन कषाय के साथ हंसना एक अलग बात होती है और वह भी कभी-कभार। प्रसन्नता भी लोगों के लिए मतलब बाधक तो बन ही जाती है। आप देखेंगे कभी न कभी अगर आप कहीं हंस देते हैं, कुछ कर देते हैं तो लोग यह समझते हैं आखिर ये किस बात पर हंसे? किसी को देख कर हंस दिया तो उसे लगता है कि जैसे हमारे लिए कोई कमजोरी है या कुछ कमी है या हम पर कोई व्यंग कर दिया इसलिए हंसते हैं। यह भी एक तरह से मतलब सावधानीपूर्वक प्रसन्न रहने वाली क्रिया है। हर समय पर आप हास्य के साथ में नहीं रह सकते हैं इससे भी आपको लोग अच्छा नहीं समझेंगे। जो ज्यादातर जिन्हें शास्त्र में तो विदूषक कहा जाता है। जो ज्यादातर जिन्हें शास्त्र में तो विदूषक कहा जाता है लेकिन आजकल बड़े laughter channel भी चलते हैं और तरह-तरह के comedian serial भी आते हैं। comedy करने वाले होते हैं तो यह सब भी जो है लोगों को जो हंसाते हैं तो इससे लोगों को प्रसन्नता तो होती है। हंसना तो अच्छा है लेकिन इससे भी, हंसाने से भी कर्म का आस्रव होता है। इससे भी हमारे लिए अगर हम किसी को चलो सुख पहुँचा रहे हैं तब तो फिर भी कहीं ठीक है लेकिन अगर हम किसी के साथ व्यंग्य करते हैं, निंदा करते हैं, वे कर्म भी हमारे लिए घातक होते हैं। इस तरह का यह हास्य नाम का भी नोकषाय है इसको भी जाने और जितना संभव हो इससे भी बचने की कोशिश की जाए।

रति कषाय

रति नाम का भी नोकषाय होता है। जिसके कारण से अत्यंत पर पदार्थ में रति भाव उत्पन्न होता है, attachment ज्यादा होता है। यह कषाय का बंध ऐसे होता है जैसे बहुत ज्यादा स्वयं भी विषयों में लीन रहना और दूसरों को भी विषयों में ही लीन रखना। जो चीजें अच्छी नहीं भी हैं उनको भी अच्छा बना करके दूसरे के सामने देना। किसी न किसी तरीके से हमारी चेष्टाओं से दूसरों में राग पैदा हो, इस तरीके के वस्त्र पहनना, इस तरीके की action करना, इस तरीके के अपना जो है किसी न किसी तरीके का भेष बना लेना, जिससे कि दूसरे लोग अपने को देख कर के राग से देखें। राग अपने अंदर पैदा करें या हम दूसरों में राग पैदा करने के लिए कोई ऐसी प्रवृत्ति करते हैं तो वह भी रति कषाय के आस्रव के माध्यम से होता है। इससे इसी चारित्र मोहनीय कर्म का बंध करके वह हमेशा उसके

फल से पदार्थों में रति ही करता रहेगा, वह कभी उससे हट नहीं पायेगा। इसलिए जिन साधनों से दूसरों में रति उत्पन्न की जाती है, उन साधनों से बचा जाता है।

अरति कषाय

जैसे रति के उत्पन्न करने के लिए साधन होते हैं ऐसे अरति उत्पन्न करने के भी साधन होते हैं। अरति में क्या होता है? कोई भी व्यक्ति का हम इस तरीके से उसके सामने पदार्थ रखें या इस तरीके से हम उसके सामने मन-वचन-काय की क्रियाएँ करें कि उसे हर चीज से अरति उत्पन्न होती रहे। हम भी अरति उत्पन्न अपने में करें और उसके अंदर भी अरति उत्पन्न होती रहे। यह अरति उत्पन्न होने से भी उसके अंदर एक घृणा पैदा हो जाती है या हम कोई भी चीजें जो उसके लिए अच्छी हैं और हम उससे जो है अरति उत्पन्न कराने के लिए हम उसे कुछ भी बुरा कह करके या उसमें कुछ भी बुराई दिखा करके उसे उससे विरक्त नहीं कर देते हैं।

अरति में विरक्ति में अन्तर

अरति में विरक्ति नहीं होती है अरति में जो है उसका ग्रहण करने का तो मन होता है लेकिन वह किसी न किसी कमी के कारण से उसको ले नहीं पाता है तो यह अरति का भाव कहलाता है। जैसे मान लो घर में कोई अच्छी चीज लेकर के आया या किसी ने कोई मान लो कोई अच्छा मकान लिया या कोई अच्छे कपड़े लिए, कुछ लिए, अब वह ले करके आया उसको तो रति भाव था उसने ले लिया था। अब किसी ने जो है कोई भी बिना वजह उसके दिमाग में कोई बात डाल दी। यह कपड़ा तो बहुत low quality का है, यह मकान जो खरीदा है वह तो बहुत ही वास्तुदोष से सहित है तो उसके अंदर एकदम से अरति उत्पन्न करा दी। यह जो अरति होती है, यह जो है कषाय के कारण से होती है। इस तरह से वह उसका जो दिमाग खराब होगा वह कषाय है। अरति का मतलब विरति नहीं है, यह अरति है। जिसके कारण से हमारा सही चीजों से एक mood खराब हो जाता है और फिर वह जो है असमंजस की स्थिति में पड़ जाता है तो उस अरति के कारण से भीतर परेशान रहता है। अब ग्रहण भी करना है और परेशानी भी पैदा कर ली। परेशानी किसी न किसी के कुछ कहने से भी हो जाती है और कोई लोग तो इसी में मजे लेते हैं तो मजे-मजे में भी कुछ न

कुछ कह देते हैं और वह जो है उसको mind कर लेता है। कभी न कभी कुछ न कुछ बात पर अरति हो ही जाती है।

अरति बिना उद्द्येश के भी उत्पन्न हो जाती है

आप देखोगे समाज में चार लोगों से कोई बात पूछोगे किसी के बारे में, कोई आप चीज खरीद रहे हो, किसी बेटी का कहीं विवाह कर रहे हो, कोई मकान वगैरह ले रहे हो। चार लोग अच्छा कहेंगे एक जो बुरा कह देगा या एक कोई उसमें कमी बता देगा उसी में आपका दिमाग खराब हो जाएगा। यह जो अरति का भाव इस तरह से कषाय पैदा कर देता है। फिर इसी के साथ में जुड़ जाता है- शोक भाव। आस्रव तो जो अरति भाव करेगा उसको होगा। अगर उसने इस उद्देश्य से कहा है कि इनका दिमाग खराब हो जाए तो उसको भी होगा। कभी-कभी आदमी अपनी धारणा से कुछ बता देता है। उसका ऐसा उद्देश्य नहीं था उसने जो सुना था कह दिया। अपनी धारणा से उसने बता दिया आपको जो है सुन कर के आप के परिणाम खराब हो गए। अब आपके लिए वह विशेष आस्रव का कारण बन जाएगा। अगर उसने इसी उद्देश्य से कहा है कि जैसे किसी का किसी के साथ में अच्छा कोई संबंध बन रहा है या कोई अच्छा घर ले रहा है, मकान ले रहा है, कुछ भी कर रहा है तो इसके लिए नहीं लेना चाहिए या नहीं ले पाए। इसलिए कुछ उसके लिए बुराई उसमें दिखा दी जाए तो उसके लिए भी कारण बन जाएगा। ये सब चीजें अभिप्राय पर depend करती हैं। इस तरह का भी अरति भाव होता है। अथवा किसी को ऐसे स्थानों पर बांधकर के रखना जहाँ पर उसको कुछ भी अच्छा न लगे, रति उत्पन्न नहीं न हो। ऐसे बिल्कुल जो है जिनको उजड़ स्थान बोलते हैं, जहाँ पर कि पहुँचने के बाद में किसी को कुछ अच्छा ही न लगे और उसमें उसको बंदिश बना करके रखा जाए तो वह भी अरति के कषाय की उत्पत्ति के लिए निमित्त हो जाता है।

शोक भाव

शोक भाव भी इसी तरीके से होता है जो आप जानते ही हो। स्वयं शोक करना, शोकाकुल होना और दूसरों को भी शोक में डाल देना या दूसरा भी शोक में पड़ जाए इस तरीके की कोई भी बात कह देना। कोई भी तरीके से उनके सामने वह दुःखी हो जाएँ इस तरीके की

बात किसी न किसी रूप में उनके सामने पहुँचा देना और इस तरीके की कोशिश करना कि इस आदमी की खुशी जो है चली जाए। देखो! हम कैसे करते हैं? कुछ न कुछ message कर देना, कुछ न कुछ जो है उसके पास में समाचार पहुँचा देना, यह सब शोक जो उत्पन्न किया जाता है वह और जो उत्पन्न करता है वह दोनों के लिए ही वह इस कषाय के आस्रव के साथ में होता है।

भय कषाय

ऐसे ही भयभीत स्वयं होना और दूसरों को भी भयभीत करना। खुद भी डरे हुए होते हैं कई बार तो दूसरों को भी डराते रहते हैं। खुद भी भय नाम का आस्रव कर रहे हैं और दूसरों को भी बिना वजह डरा रहे हैं या इस तरीके की डरावनी कोई भी फिल्में होती हैं उनमें ले जाना, दिखाना और फिर जो है लोगों को डरा कर के उसमें आनंदित होना।

Class 20

कोई भी डरावनी चीजें लोगों के सामने अकस्मात छोड़ देना। (पहले लोग खेल किया करते थे, जैसे प्लास्टिक की छिपकली वगैरह आती है, कहीं भी उन्हें पटक दे, एकदम से जो है और जहाँ कहीं भी सभा बैठी होगी, एकदम से अगर छिपकली गिरेगी तो वैसी ही लगती है बिल्कुल पीली-पीली, एकदम से सब उठकर भागे तो सब हंस लिए) इस तरीके के जो खेल होते हैं। ये भी जो है भय उत्पन्न करना, इससे ऐसे कर्मों का आस्रव होता है कि जो कर रहा है उसको भी फिर कभी ऐसा निमित्त मिलेगा कि वह भी भयभीत होगा। उसके लिए अगर कहीं तीव्र कषाय से ऐसा बंध हो गया तो भय के कारण से उसे बहुत हानियाँ भी हो सकती हैं। उसका खुद भी अपना जीवन भय के कारण से खराब हो सकता है। यह भय भी एक कषाय है, इसे जो दूसरों में उत्पन्न नहीं करता, वही निडर रहता है।

जुगुप्सा कषाय

इसी तरीके से होती है- जुगुप्सा। जुगुप्सा मतलब ग्लानि करना। विशेष रूप से जो व्रती होते हैं, तपस्वी होते हैं या अच्छा आचरण करने वाले होते हैं, सत् मार्ग पर चलने वाले होते

हैं, उनके प्रति ग्लानि का भाव रखना। यह जुगुप्सा नोकषाय वेदनीय कर्म का आस्रव कराता है।

पुरुष को स्त्रीवेद मिलने के कारण

फिर तीन वेद हैं- स्त्रीवेद तो स्त्रीवेद का आस्रव किससे होता है? आप जानते ही होंगे। स्त्रीवेद का आस्रव तो कोई भी कर सकता है। मान लो कोई पुरुष है, तो वह पुरुष भी अगर स्त्री के प्रति ज्यादा उत्सुक रहता है, स्त्री में ज्यादा लंपटता रखता है या स्त्री में ज्यादा आसक्ति रखता है तो वह पुरुषों हो करके भी स्त्रीवेद कर्म का आस्रव करेगा यानी जो व्यक्ति स्त्रियों में ही जो है हमेशा आनंदित रहता है। किसी न किसी तरीके से स्त्रियों के रूप-रंग को देख कर के हमेशा मन बहलाना। इस तरीके की जो प्रवृत्ति रखता है वह भी जो है स्त्री वेदनीय कर्म का आस्रव करता है। अभी तो वर्तमान में पुरुष है। अब देखो! कर्म का सिद्धांत तो सीधा-सीधा जैसे energy का सिद्धान्त होता है। ऐसे ही कर्म का सिद्धान्त है जिधर हम जैसा भाव करेंगे, जैसा हमारे अंदर attraction होगा वैसे ही कर्म का हमारे अंदर बंध होगा। फिर उसी कर्म के फल से हमें वैसी ही चीज मिलेगी। जो लोग स्त्रियों के प्रति ज्यादा लालायित रहते हैं, स्त्रियों को देखने में, कई तरीके से उनके नृत्य, ज्ञान और फिल्म इत्यादि देखने में लालची मनोवृत्ति के होते हैं। उनके लिए अभी भले ही वे पुरुष हैं लेकिन उनके लिए स्त्री वेदनीय कर्म का आस्रव होता है।

स्त्री को स्त्रीवेद मिलने के कारण

स्त्रियाँ भी स्त्री बनती रहती हैं तो कैसे बनती रहती हैं? उन्हें अपनी स्त्री पर्याय में ही बहुत अच्छा लगता है। स्त्री से बढ़कर कोई पर्याय ही नहीं है क्योंकि सब लोग स्त्रियों को ही देखते हैं। हम सुंदर हैं तो सुंदरता को बनाए रखना और उस सुंदरता से ही दूसरों को आकर्षित करना, इतनी अच्छी तो पर्याय कोई दूसरी हो ही नहीं सकती है। ऐसा सोच कर के जो उस स्त्रीपने में आसक्त हैं तो उन्हें स्त्री वेदनीय कर्म का ही आस्रव होगा। यह बहुत अच्छी मतलब आस्रव के विषय में अच्छी चीज है सोचने की कि बहुत सी स्त्रियाँ कहती हैं। आजकल की modern जो lady होती हैं कि बुरा क्या है? जो आप कहते हो स्त्री पर्याय का अंत हो जाए, स्त्री पर्याय का अंत हो जाए, ऐसा क्या बुरा होता है स्त्री पर्याय में? उन्हें स्त्री

पर्याय से मोह होता है क्योंकि उन्हें पता है कि इस पर्याय के कारण से ही हम भी सुखी हैं और जो भी हमारे साथ है वह भी सुखी हैं। हम जिस तरीके से हमारा रूप सौंदर्य है उससे हम बहुतों को अपने में रख सकते हैं, बहुतों को अपनी ओर attract कर सकते हैं। इसलिए बुरा क्या है? इस तरीके के मोह-भाव से जो कहा जाता है, उन्हें पता तो नहीं होता कि यह क्यों बुरा है? लेकिन यह बुरा इसलिए होता है क्योंकि उसमें आसक्ति होने के कारण से उस पर्याय को अच्छा समझने के कारण से वे स्त्रियाँ बनती रहेंगी। यह तो सीधा साधा सा नियम है कि जिस तरीके की हमारे अंदर आसक्ति होगी हमें वही चीजें मिलेंगी।

पुरुष वेद मिलने के कारण

इसी तरीके से पुरुष वेद क्यों मिलता है? उसके लिए भी आचार्य कहते हैं कि जो पुरुष होकर के भी बहुत सीधा simple रहता हो, कोई भी तरीके से उसे पर स्त्रियों से कोई प्रयोजन ही न हो। केवल अपनी स्त्री से ही बस पर्याप्त संतुष्ट होता हो और किसी भी तरीके से वह अपने भी पुरुष पने को भी दिखाने की कोशिश न करता हो। यानी कि बहुत ज्यादा सुंदरता दिखा करके, बहुत अच्छी-अच्छी चीजें पहन कर के, बहुत ज्यादा अपने शरीर को आकर्षक बना करके जो लोगों को लुभाया जाता है तो उससे उसी तरीके के कर्मों का आस्रव होता है तो जो इस परिणाम से रहित होता है, वह उससे उदासीन रहता है तो उसकी मंद कषाय के कारण से उसे पुरुषपना मिलता है क्योंकि यह अगर हम वेदों में भी तुलना करें तो सिद्धान्त के अनुसार स्त्री वेद से पुरुष वेद प्रशस्त माना गया है। प्रशस्त चीज को मतलब शुभ चीज को प्राप्त करने के लिए आप के परिणामों में भी शुभता आनी चाहिए, कषायों की कमी होना चाहिए तो कषायों की मंदता होने पर ही यह पुरुष वेद का आस्रव होता है।

नपुंसक वेद मिलने के कारण

नपुंसक वेद तो अत्यंत क्लेश भाव के साथ होता है। जो दूसरी स्त्रियों के साथ बलात्कार करते हैं, छीना-झपटी करते हैं, तरह-तरह से लोगों को पाप में डालने के तरह-तरह के आयोजन करते हैं और अपने साथ और अपने साथ में दूसरे लोगों को भी लेकर के तरह-तरह से जो अपनी गंदी प्रवृत्तियों के कारण से कामातुर होकर के इस तरह से जो

अपने अंदर की कषायों को जीत नहीं पाते हैं वह अगले जन्म में नपुंसक बनते हैं। इस तरह से जैसा करते हैं वैसा ही कर्मों का आस्रव होता है और उसी तरह के कर्मों का फल मिलता है। मनुष्य पुरुष होकर के भी बहुत से पुरुष, पुरुष में भी आसक्त होते हैं, बहुत से बच्चे जो स्कूलों में पढ़ते हैं बच्चों के साथ ही आपस में मिलकर के गंदे काम करते हैं। इसी से जो एक काम की आसक्ति तीव्र होती है उसी से ही उनको अगला फिर जन्म में ऐसा वेद मिलता है क्योंकि नपुंसक वेद का लक्षण ही यही है कि वह न तो पुरुष में संतुष्ट होता है, न स्त्री में संतुष्ट होता है। उसकी तृप्ति किसी से नहीं होती। जिसके अंदर इस तरीके की कामवासना ज्यादा होती है वह अगले जन्म में भी फिर इस तरीके से बनता है तो इन कर्मों के आस्रव के कारण से फिर वह चारित्र लेने लायक तो रह ही नहीं जाता। ऐसा हो जाता है।

चारित्र मोहनीय कर्म उदय के कारण को समझे **-**

इस तरह से इस सूत्र में तो केवल कषाय लिखा हुआ था लेकिन कषाय में चार बड़ी कषाय और नौ-नौ कषाय सब के आस्रव के अपने-अपने कारण हैं, वे सब इसी सूत्र में गर्भित हैं। ऐसा समझ कर के जिन्हें अपने चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम बढ़ाना है, जो कहते रहते हैं भैया क्या करें? चारित्र नहीं ले पा रहे, क्यों नहीं ले पा रहे? चारित्र मोहनीय कर्म का उदय है तो यह कह कर के तो टाल देते हैं चारित्र मोहनीय कर्म का उदय है। लेकिन यह नहीं सोचते कि चारित्र मोहनीय कर्म के उदय का मतलब क्या? कषायों की तीव्रता है। अगर कषायों की मंदता होगी तो चारित्र के प्रति भाव आएगा और कषायों की तीव्रता होती है तो वह तीव्रता तो हमें कहने में अच्छा नहीं लगता तो एक बहुत अच्छा सैद्धान्तिक शब्द पकड़ लिया 'चारित्र मोहनीय कर्म का उदय है' 'चरित्त मोहवश लेश न संयम' चारित्र मोहनीय कर्म का उदय है इसलिए थोड़ा भी संयम नहीं आता। उसको भी बड़ा मतलब अच्छा समझते हैं। कोई भी बात आई, तुरंत कह डाला मतलब कि जैसे कि वह एक हथियार बना रखा है। आप इतने विद्वान हैं, इतना सब कुछ पढ़ते हैं, स्वाध्याय करते हैं, थोड़ा चारित्र की तरफ क्यों नहीं बढ़ते हैं? क्यों कुछ नहीं छोड़ पाते हैं? क्यों रात्रि में भी भोजन पानी सब कुछ? चारित्र मोह का उदय है क्या कर सकते हैं?यूँ नहीं कहेंगे कषाय की तीव्रता है, राग की तीव्रता है। कषाय इतनी तीव्र है कि हम कोई भी चीज की आसक्ति नहीं

छोड़ पा रहे। मुझे ऐसा लगता है कि लोगों ने मतलब कि अच्छे-अच्छे शब्दों का चयन करके अपनी सुरक्षा कवच बना रखे हैं जबकि चारित्र मोहनीय जो कह रहा है उसका मतलब ही है कि कषाय की तीव्रता है। कषाय की तीव्रता कहेंगे तो बुरा लगेगा।

कषायों की तीव्रता ही चारित्र लेने में बाधक

अच्छा! इनमें कषाय है, इतना स्वाध्याय करने के बाद भी कषाय करते हैं। ऐसा कहना अच्छा नहीं लगेगा तो सीधा-सीधा कह देते हैं, चारित्र मोह का उदय है लोग समझ नहीं पाते हैं। अब तो समझ गए आप लोग! अब आपके सामने कोई कहे कि भाई क्या है? चारित्र मोहनीय कर्म का उदय है तो समझ लेना कषाय की तीव्रता है। इतना तो समझ ही सकते हो न। अतः कषाय के उदय में तीव्र परिणाम ही चारित्र मोहनीय कर्म का काम है। इसलिए अपनी कषायों की मन्दता रखोगे तो चारित्र के प्रति झुकाव होगा। किसी भी तरीके की कषाय की तीव्रता होने पर चारित्र के प्रति झुकाव नहीं होता।

आप देखेंगे कि अगर आप कषाय की तीव्रता में बहुत ज्यादा अहंकारी बनेंगे तो भी आपका किसी के प्रति मतलब झुकने का भाव नहीं आएगा, विनीतपने का भाव नहीं आएगा। आपके अंदर कोई भी नम्रता का भाव नहीं आने के कारण से जो भी पूज्य पुरुष होंगे उनका भी अपमान करने में भी आपके अंदर दुःख नहीं होगा। किसी भी तरीके से उनका अपमान करके भी आपको ऐसा नहीं लगेगा कि हमने बुरा कर लिया क्योंकि अहंकार इतना है। यह कषाय ही उस चारित्र की तरफ झुकने नहीं देता। चारित्र की तरफ झुकने के लिए आपको चारित्रवानों की तरफ पहले झुकना पड़ेगा। गुण हमें तब प्राप्त होते हैं जब हम गुणी का सम्मान और आदर करते हैं। गुणी का अगर हम आदर सम्मान नहीं करेंगे तो हमें गुणों की कभी प्राप्ति नहीं होगी। यह भी इसी सूत्र से समझना। जिस गुण की हमें प्राप्ति करना है हमें उस गुण को धारण करने वाले वैसे ही व्यक्तियों के पास उनके समागम में रहना पड़ेगा। बहुत कुछ तो चारित्र उनकी सेवा से ही आ जाता है।

चारित्रवंतों के प्रति अपना आदर सम्मान रखना चाहिए।

बड़े-बड़े आचार्यों ने भी ज्ञानार्णव में भी एक chapter यह वृद्ध सेवा, क्या chapter है? वृद्ध सेवा! वृद्ध सेवा का मतलब? अब मुनि महाराज के लिए वृद्ध सेवा क्या? वे कोई बूढ़ों की सेवा करने थोड़े ही न जाएँगे। वृद्ध सेवा का मतलब जो अपने से बड़े हैं। अपने से ज्ञान में, संयम में, सम्यग्दर्शन में, तप में, जो अपने से बढ़कर के हैं उनकी सेवा करने से हमें वही गुणों की प्राप्ति होती है, यह logic है। जब हम इस चारित्र को प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको चारित्रवंतों के प्रति अपना आदर सम्मान तो रखना ही पड़ेगा। उसके बिना तो आप कहते ही रहोगे चारित्र मोहनीय कर्म का उदय है, उस कर्म का उदय कभी कम नहीं होगा, नष्ट नहीं होगा। यह कर्मों के इसी तरीके से आस्रव, भाव और उनके फल समझकर के हम उससे बचने का उपाय कर सकते हैं। यह सीखने का यही एक अच्छा तरीका है और तत्त्वार्थ सूत्र के अन्दर यही वह एक अध्याय है, जहाँ से आदमी इसको सीख करके अपने आप को संभाल सकता है, अपनी कमियाँ देख सकता है। कहना चाहिए यह तो पूरा जिसे आप बोलते हो न यह मन को देखने का दर्पण है।

छठवाँ अध्याय चित्त की वृत्तियों को समझने का दर्पण है

छठवाँ अध्याय क्या है यह? अपने मन को, यह अपने चित्त की वृत्तियों को समझने का एक दर्पण है। 'तेरा मन दर्पण कहलाए' अब दर्पण कैसे कहलाए? जब दर्पण सामने हो तब तो कहलाए। यह दर्पण सामने रखो, इस छठवें अध्याय के सूत्रों के ज्ञान में अपने ज्ञान को देखते रहो कि हम कहाँ पर किससे, कितना जुड़े हुए हैं और कौन से भाव के कारण से हमारे अंदर यह कर्मों के आस्रव हो रहा है। बड़ा अच्छा अध्याय है। गुरु महाराज आचार्य श्री हमेशा कहते हैं छठा अध्याय मतलब छटा हुआ अध्याय मतलब सभी अध्यायों में छटा हुआ अध्याय है। यह है भी है वास्तव में इसको पढ़ो। एक बार पढ़ने से काम नहीं होता बार-बार सुनते रहो। कई बार क्या होता है? जब हम निरंतर किसी चीज का श्रवण करते रहते हैं तो उस तरीके के विचार हमारे अंदर धीरे-धीरे आने लग जाते हैं। हम अपनी कमियों पर पर्दा नहीं डाले, अपनी कमियों को स्वीकार करें। उन कमियों पर हमें विजय प्राप्त करने का भाव आए (to overcome our faults) मतलब हम अपने दोषों को पराभूत करें। उनके ऊपर विजय प्राप्त करें, उनको overcome करें, न कि जो है अच्छा है। अब किसी ने कह दिया भाई थोड़ा भी कुछ नियम-संयम क्यों नहीं? चारित्र मोहनीय कर्म का उदय है। यह जो

है अपनी कमियों को बढ़ाना है। कहना चाहिए कि आपका कथन बिल्कुल सही है, यह मेरी कमजोरी है मैं क्या करूँ? सोचता हूँ लेकिन ले नहीं पाता हूँ। ऐसे कर्म का उदय है तब तो फिर भी ठीक है और सीधा-सीधा एक ही फंडा अपनाते रहते हैं लोग। आपको यह जानना है कि यह भी अपने-आप में एक कषाय की प्रवृत्ति बन जाती है। ऐसा बार-बार कहना भी अच्छा नहीं होता है।

आगे देखते हैं-

बाह्यारंभ-परिग्रहत्वं नारकस्यायुष:।।**1.15**।।

अब यहाँ से आयु कर्म का वर्णन प्रारंभ होता है कि आयु कर्म जो चार प्रकार की आयु में हैं उन आयु के लिए भी कौन-कौन से परिणाम कारण हैं, जिसके कारण से वह जीव नरक आदि गतियों को प्राप्त होता है। तो सबसे पहले यहां पर 'नारकस्य' मतलब नर्क आयु वाला जो जीव है उसको नारक कहा जाता है। उस नारक आयु या नारकी बनने के लिए कौन से परिणाम आवश्यक हैं? 'बहु आरंभ और बहु परिग्रह' यह 'बहु' शब्द दोनों के साथ जोड़ना है।

नरक आयु बंध का कारण

आरंभ का मतलब होता है- इस तरीके की activities जिनके माध्यम से जीवों का घात ज्यादा होता है, जीव वध को ही आरंभ कहते हैं। इस तरीके के व्यापार हो, इस तरीके के साधन हो, जिनके उपयोग हमें बहुत ज्यादा करके, बहुत जीवों की हिंसा करनी पड़ती ही है उसके बिना हमारा व्यापार चलता ही नहीं है। इस तरीके के जो आरंभ होते हैं, वह जो है बहुत जीवों के घात के परिणाम में भी आपको दया भाव नहीं आ रहा। आपके अंदर जीवों के प्रति द्वेष होने के कारण से या अपने पैसा धन आदि में अत्यधिक लोभ होने के कारण से आप उससे विरति नहीं ले पा रहे या उसको कम नहीं कर पा रहे। यह भी जो है जीव घात के परिणाम से, हिंसा के परिणाम से नरक आयु का बंध होता है, यह बहु आरंभ! बहु परिग्रह क्या? परिग्रह मतलब जो पर वस्तु को आत्मीय कर लेना, अपना बना लेना या हर पर पदार्थ में मेरेपन का भाव लाना। यह भी मेरा, यह भी मेरा, यह भी मेरा, यह सब जिस-जिस में मम-मम भाव आ जाता है, 'मम इति परिग्रह' जो मेरा हो गया वह हमारा

परिग्रह हो गया। अपने लिए आवश्यक है, अपने जीवन के लिए आवश्यक है, अपने भविष्य के लिए आवश्यक है, उसमें कोई बात नहीं लेकिन बहु का मतलब यह हो जाता है जो extreme में पहुँच रहा है। हर चीज extreme को belong कर रही है।

जयललिता का नाम सुना है आपने कभी, शायद उसकी death हो चुकी है। उसके बारे में सुना था after death भी जो है उसकी खोज-खबर ली गई थी। पता नहीं कितना अंबार था उसके पास? सैंडिल भी हैं, जूते भी हैं, न जाने कितनी अलमारियाँ भरी पड़ी हैं। इस तरीके की जो प्रवृत्तियाँ हैं ये कहलाती हैं- बहु परिग्रह। आप देखें लोगों में ऐसी प्रवृत्तियाँ रहती हैं। बहुत आरंभ और बहुत परिग्रह में मुख्य रूप से हमारी लेश्या बिगड़ जाती है।

Class 21

कृष्ण लेश्या नरक आयु बंध में प्रमुख कारण है।

अब नरक आयु का बंध होगा तो आचार्य कहते हैं, कृष्ण लेश्या इसके लिए प्रमुख है। यद्यपि नारकी नील लेश्या वाले भी होते हैं, कापोत लेश्या वाले भी होते हैं लेकिन यहाँ पर जो नरक आयु के बंध में मुख्य रूप से कृष्ण लेश्या वाले जो परिणाम है, वह काम में आते हैं। इस लेश्या के साथ में जो रौद्र परिणाम जुड़े रहते हैं (एक आर्तध्यान होता है और एक रौद्र ध्यान होता है) तो जो रौद्र ध्यान होता है वह रौद्र ध्यान ही इस आयु के बंध के लिए कारण हो जाता है। अब रौद्र ध्यान में क्या होता है? कि जो हिंसा हो रही है, खूब परिग्रह इकट्ठा किया जा रहा है उसी में वह आनंद मान रहा है। अच्छा है! इसी से तो सब हो रहा है, इसी से तो हम इतने बड़े आदमी बने हैं। उस हिंसा में आनंद मानना। ऐसा व्यापार, ऐसी चीजें होना जिसमें हिंसा कम हो और फिर भी हम उस व्यापार को बढ़ा पाए, बढ़ोतरी कर पाए तो कोई बात नहीं लेकिन जिनमें जीव घात बहुत ज्यादा है ऐसे बहुत सारे जैसे जिनमें कीड़े ही मारे जाते हैं, नियम से जिसमें दवाइयों के माध्यम से जिनका काम सिर्फ जीवों को मारना ही है। उस तरीके की जो व्यापार हैं या जिन व्यापारों में नियम से बड़े-बड़े जीवों का घात होता है, वह सब क्रूरता के भावों में भी आनंद लेना यह रौद्र ध्यान होता है।

बहुत से लोग बड़े-बड़े इस तरीके के हिंसक काम भी आजकल कर रहे होते हैं। poultry farm वगैरह खोलना, चलाना कई तरीके की बैंक से loan मिलते हैं जिसके माध्यम से कई तरीके के इस तरह के रोजगार दिए जाते हैं। उसमें भी तरह- तरह की हिंसाएँ होती हैं और उसमें भी जो है सब को ले करके पैसा कमाना, अच्छा लगना। जो गलत साधनों से इस तरह से पैसा कमाते हैं, वह रौद्र ध्यान करने के कारण से उनके लिए उनकी लेश्याएँ खराब रहती है। लेश्या मतलब भीतर के भावात्मक परिणाम तो वह जो है उनके (काले) कृष्ण लेश्या वाले या नील लेश्या वाले होंगे इससे उनके लिए हमेशा आयु जो होगी, अगर उसका बंध होगा तो नरक आयु बंध होने की पूर्णतया संभावना होती है। जो बहुत ज्यादा क्रूर होते हैं, जीवों को मारते हैं, बड़े-बड़े slaughter houses के माध्यम से अपनी आजीविका चला रहे हैं और तरह-तरह से इसी में जीवों को मारने में ही हर्षित होते हैं इस तरह की प्रवृत्ति वाले जीव नरक आयु का बंध करते हैं तो यह सब आप जानते हैं। क्रूरता इसमें मुख्य चीज है और क्रूरता में भी रौद्र ध्यान हमेशा बना रहता है तो यह नरक आयु के कारण है।

इसी तरीके से आचार्य कहते हैं

माया तैर्यग्योनस्य।।**1.16**।।

अब यह तिर्यंच आयु है तो तिर्यंच आयु के लिए क्या कारण होता है? कहते हैं- माया का भाव। माया मतलब deceitfulness,जिसे हम कहते हैं- छल-कपट, वंचना, ठगना, बहुत ज्यादा दूसरों को ठग करके आनंदित होना। इस तरह से ठगना कि सामने वाले को पता ही न पड़ पाए। आपके ऊपर विश्वास करके उसने अपनी कोई भी चीजें आपके पास में दी या आपसे सौदा किया। आपने उसके विश्वास का घात किया और उससे आप अपने आप को बड़ा होशियार समझते हैं तो यह जो प्रवृत्ति है यह मायाचार कहलाता है। किसी को कम देना और ज्यादा लेना यह तरह-तरह से जो हम किसी भी प्रकार की चोरियाँ करके या मायाचार करके अपने पैसे को बढ़ाने की प्रवृत्ति बना करके रखते हैं, वह मायाचार भी तिर्यंच योनि का कारण बन जाता है। कुटिल परिणाम इसी को बोलते हैं। इस मायाचार में मुख्यता रहती है- नील लेश्या और कापोत लेश्या की। किसकी? जिसके कारण से वह आदमी बिल्कुल ऐसा आलसी और सठ हो जाता है। सठ मतलब जानते हो जिसे आप लोग

बोलते हो सठिया गया। आप लोग तो बोलते हो भाई 60 की उम्र का हो गया, सठिया गया। सठ का मतलब यह नहीं होता है कि साठ का हो गया तो सठिया गया। सठ का मतलब यह होता है कि जिद करने की जिसने जैसी आदत डाल ली हो, जैसा उसने अपने मन में कुटिल या छल कपट करने की आदत डाल ली हो तो अब वह उससे बच नहीं पा रहा है। हर किसी के साथ वैसा ही व्यवहार कर रहा है, उसका नाम है- सठ। सठ इस तरीके की प्रवृत्ति हो जाना। इसको बोलते हैं कि उसके अंदर नील लेश्या या कापोत लेश्या के परिणाम बने रहते हैं और इसके कारण से वह हमेशा आर्त ध्यान करता रहता है। नरक आयु के लिए रौद्र ध्यान मुख्य कारण बताया गया।

नील लेश्या या कापोत लेश्या के परिणाम से आर्त ध्यान होता है
तिर्यंच आयु के लिए आर्त ध्यान मुख्य कारण होता है। आर्त ध्यान में वह हमेशा दुःखी बना रहता है। बहुत कुछ होगा भी तो भी जो उससे छूट रहा है या जिसके कारण से वह उस ठगी में या वंचना में अपने परिणामों को जोड़े रखा है, उसमें जो वह अपने मन को कई तरीके से खेद-खिन्न बनाकर के दुःखी रखता है, वही उस दुःख के कारण से उसके लिए आर्त ध्यान होता है। यह आर्त ध्यान तिर्यंच आयु का प्रमुख कारण हो जाता है। आर्त ध्यान में अभी नौवें अध्याय में आपको बताया जाएगा। सब तरीके का आर्त ध्यान होता है। कोई भी अपना सगा-संबंधी अगर चला जाता है तो उसी में लंबे समय तक दुःखी बने रहना यह भी आर्त ध्यान का कारण होता है। अथवा किसी के प्रति द्वेष था वह भी अगर मान लो मर भी गया तो भी उसका द्वेष फिर भी नहीं छोड़ना। जिससे हमारा बैर था, वह मर भी गया लेकिन फिर भी ध्यान रहना कि इसने मुझे कितना दुःख दिया? इसने मुझे कितना दुःख दिया? अब वह मर भी गया, चला भी गया तो भी ध्यान रहता है कि उसने मुझे कितना दुःख दिया? इतना दुःख दिया कि आज भी हम दुःखी हो रहे हैं, उस दुःख को याद करके। वह तो मर गया, चला गया लेकिन हमें उस दुःख की याद करके आज भी जैसे ही उस पर ध्यान जाता है तो परिणाम आज भी बिगड़ जाते हैं। इसको बोलते हैं- आर्त ध्यान। ऐसे परिणामों से भी वह जीव तिर्यंच बनता है।

फिर कहते हैं-

अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं मानुषस्य।।**1.17**।।

मनुष्य आयु के लिए भी कारण क्या है? बस! जो नरक आयु के परिणाम है, उसी में उल्टा कर दो। उसमें बहुत आरंभ-परिग्रह है और यहाँ पर क्या लिखा है? 'अल्प आरंभ और अल्प परिग्रह' हिंसा तो हर जगह होती है लेकिन जितना कम से कम हिंसा में काम चल जाए उतने में अपना जीवन चलाता है। परिग्रह भी उसके पास में आसक्ति नहीं होती है जितना है उतने से ही वह संतुष्ट हो लेता है। अल्प आरंभ और अल्प परिग्रह में जो जीव अपना जीवन चलाता है, वह देखने में तो दूसरे के सामने थोड़ा सा हो सकता है, किसी से कमतर लगे। देखने में किसी से कुछ कम हो लेकिन उसकी अपनी मंद कषाय के कारण से उसे अधिक होने की कोई लालसा नहीं रहती है। दिखावा नहीं करना है, भीतर से ही ऐसे परिणाम होना कि हमें इच्छा ही नहीं है। उसको अगर कोई ज्यादा देना भी चाहता है कि भाई लो और ले लो, यह भी ले लो, तुम्हारे पास नहीं है चलो हम दे देते हैं तो भी वह लेगा ही नहीं। free में भी देगा तो भी नहीं लेगा वह क्योंकि उसके पास कषाय नहीं है। ग्रहण वृत्ति कषाय के साथ होती है तो वह अपने में संतुष्ट है। नहीं भैया! इतना बहुत है मैं इतने से ही परेशान हो जाता हूँ, इतने को ही नहीं संभाल पाता हूँ। तुम और दे दोगे और परेशानी बढ़ जाएगी तो वह अपनी परेशानी बढ़ाना नहीं चाहता। ऐसे अपने परिणामों से संतुष्ट हो लेता है।

परिग्रह बढ़ाने की होड़ ही नरक आयु का कारण है

एक घर है उसी में संतुष्ट है। आजकल तो फैशन बनी हुई है, एक घर यहाँ होना चाहिए, एक घर बड़ी metro city में होना चाहिए। एक घर कहीं कोई अच्छी जगह पर जहाँ पर hill station पर होना चाहिए। आपके लिए ये सब जो तरह-तरह के भाव बन रहे हैं, ये सब अपने परिग्रह के भाव हैं। जहाँ-जहाँ कोई भी चीजें बनाओगे, जहाँ-जहाँ कुछ करोगे, वहाँ-वहाँ की आपके लिए जो मम भाव रहेगा उसके कारण से आपको उसकी चिंता रहेगी। वह चिंता ही आपके लिए परिग्रह बनी रहेगी। उसकी सुरक्षा भी करना है। उसके लिए कुछ न कुछ वहाँ पर आयोजन भी करना है। जो होगा तो उसके कारण से भी जो पाप आस्रव होगा वह भी होगा। इस तरह का यह सब जो बंदोबस्त होता है यह सब भी क्या कहलाता है? यह बहु परिग्रह हो जाता है। अल्प परिग्रह वाला! भैया क्या करना है? एक जीवन जीने

के लिए इतना बड़ा मकान है यही बहुत है, इसी में रहा ही नहीं जाता। अब दूसरा ले करके क्या करेंगे? ऐसे संतुष्ट होने के भाव होना। ऐसे आदमी के पास अगर अपने पुण्य से बहुत आता भी है तो क्या करें? वह है जो है बढ़ाने की कोशिश नहीं करता और जो होता है उसे दान पुण्य आदि अच्छे कार्य में लगा करके उससे अपना लोभ कम करके अपने को बनाए रखता है, लोभ बढ़ाना नहीं है।

लोभ की प्रवृत्ति का त्याग ही मनुष्य आयु के बंध का कारण हैजो लोभ नहीं बढ़ाता वह मनुष्य आयु के आस्रव का बंध कर लेता है उसके लिए मनुष्य आयु मिल जाती है क्योंकि मनुष्यपना भी अच्छे परिणामों से मिलता है। आप इतना तो समझ लो कि जितने मनुष्य बने हैं उन्होंने पूर्व जन्म में तो अल्प आरंभ-अल्प परिग्रह रखा होगा। पहले तो इतनी तपस्या करके आए हो जब मनुष्य बने हो। अब यहाँ आ करके, अब बहुत आरंभ-बहुत परिग्रह में लग रहे हो। अब क्या हो रहा है? यह सोचने की बात है। मनुष्य बनने के लिए तो हमने कहीं न कहीं ऐसे परिणाम किए अब यहाँ आकर बहुत ज्यादा तीव्र रौद्र ध्यान के परिणाम, कषाय के परिणाम, लेश्याएँ खराब कर रहे हैं। बहुत परिग्रह रख रहे हैं, बहुत आरंभ की चिंताएँ कर रहे हैं तो ये परिणाम हमारे लिए अवनति के कारण बन सकते हैं। यह सोच कर के व्यक्ति को अपने को संभालने की कोशिश करना चाहिए। इसलिए मनुष्यपना दुर्लभ क्यों है? इसलिए दुर्लभ है क्योंकि जो मनुष्य बनकर के यहाँ आते हैं वे तो बहुत पहले से कुछ अच्छा परिणाम करके, अच्छी आयु बांध करके आए इसलिए मनुष्य दुर्लभ है। ऐसे लोग तो कहीं से भी आ सकते हैं लेकिन यहाँ आकर के जब वे फिर से वैसी ही कषायों में उलझ जाते हैं तो फिर दुर्लभता का कोई मतलब नहीं रहता है। दुर्लभता इस sense में है कि वह मनुष्य बना। दुनिया में अच्छे लोग जो हैं वे आकर के मनुष्य बन गए। अब जो मनुष्य हैं वे अगर आज बहुत संख्या में अपना आचरण, अपने परिणाम खराब रख रहे हैं तो यह अधोगति की तैयारी कर रहे हैं। यह मनुष्य आयु के आस्रव का कारण जानना। आचार्य कहते हैं-

स्वाभाव-मार्दवं च।।**1.18**।।

यह भी मनुष्य आयु के आस्रव का कारण है। 'स्वभाव से ही मार्दव मतलब मृदुता का भाव होना' कोमल परिणाम होना, soft nature जिसको बोलते हैं। ज्यादा जो है हठी, ढीठ, जिद्दी type के यह सब आग्रही नहीं होना और अपना soft nature रखना, सब के प्रति अच्छा व्यवहार करना, मिष्ठ वचन बोलना। किसी के लिए कठोर वचन अगर कभी निकल भी जाता है तो ऐसे जीवों को बड़ा दुःख होता है। मैंने उससे क्यों बुरा बोल दिया? कहीं मेरे बोलने से उसको बहुत पीड़ा तो नहीं हो गई? उसे भी परेशानी पैदा हो जाती है। ऐसा जो व्यक्ति अपना nature रखता है, वह स्वभाव से मृदु कहलाता है। हमारी चेष्टाओं से किसी को बुरा तो नहीं लग गया। हम तो हंस रहे थे उसने कहीं देख करके यह तो नहीं समझ लिया कि हमारे ऊपर हंस रहे थे तो बेचारा फिर दूसरे दिन जाकर के या उसी दिन फोन करके पूछ लेता है- भैया! आपने कुछ mind तो नहीं किया आपने कुछ बुरा तो नहीं लग गया। उसके परिणाम इतने कोमल रहते हैं कि उसे अपनी चेष्टाओं से ऐसा लगता है किसी को दुःख न पहुँचे। ऐसे लोग जो मृदु स्वभाव के होते हैं ये by nature होते हैं। स्वभाव मतलब कोई artificial इन्हें acting नहीं करनी पड़ती है कि देखो! इन्हें दिखाना पड़े कि भाई देखो! यह कितना मृदु है कि इस कारण से ऐसा कर रहा है। जो स्वभाव से ही बहुत ही कोमल होते हैं, ऐसी भी जीव अगले समय के लिए, अगले क्षणों में मनुष्य आयु का ही बंध करते हैं। अब यह सूत्र यहाँ पर अलग से क्यों लिखा? उसी में मिला करके क्यों नहीं लिखा? इसका एक कारण यह है कि यह जो 'स्वभाव मार्दवं च' च भी दिया है यह मनुष्य आयु के लिए भी कारण होता है और आगे आने वाली जो देव आयु है उसके लिए भी कारण है।

पीत लेश्या वाले व्यक्ति देव आयु का बंध कर सकतें है

अगर स्वभाव में और अच्छी मृदुता हो गई, परिणाम इसमें मनुष्य आयु में परिणाम पीत लेश्या वाले भी होने लग जाते हैं। मिश्र परिणाम भी हो जाते कापोत और पीत लेश्या वाले भी होंगे। लेकिन जो स्वभाव से मृदु होंगे वह पीत लेश्या वाले होंगे। आपने देखे होंगे बहुत सारे ऐसे सज्जन होते हैं, जो भले ही अपने अंदर मिथ्यात्व का भाव उस sense में कि उन्हें कोई भी वीतराग-देव-शास्त्र-गुरु के ऊपर तो चलो कुछ भी ज्ञान नहीं, श्रद्धान नहीं लेकिन उनका अपना सदाचरण इतना अच्छा होता है कि वह बहुत सदाचार से जीवन जीते हैं। सदाचार से आजीविका के साधन अपनाते हैं और किसी के लिए दुःख नहीं पहुंचाते हैं।

बहुत सज्जन किस्म के लोग हर समुदाय में मिलते हैं, हर जाति में मिलते हैं यह स्वभाव से मृदु लोग इसीलिए कहलाते हैं। ऐसे लोगों के लिए जो है, जिनकी जैसे कभी मृत्यु हो जाती है तो लोग कहते हैं भैया समाज में बड़ा अच्छा आदमी था। very gentleman जिसको बोलते हैं। वे इसी तरीके की आयु का बंध स्वभाव से कर लेते हैं। देखो! यहाँ पर कि ये जो परिणाम हैं ये सबके लिए हैं। जो जीव जैसे परिणाम कर रहा है वह सब यहाँ पर लिखा हुआ है। इसमें कोई ऐसा नहीं है कि भाई! जैन कौन बनेगा? जैन से मोक्ष किसको होगा? ऐसे परिणाम यह सब जैन ही करेंगे। ऐसा कुछ नहीं है। जो जीव जैसे परिणाम करेगा उसको वैसी ही आयु का बंध होगा। मनुष्यों में कर्मभूमि के भी मनुष्य होते हैं, भोग भूमि के भी मनुष्य होते हैं। कर्म भूमि के मनुष्यों की सब बात कर दी। भोग भूमि के भी जो मनुष्य बनते हैं वह भी जो यहाँ पर अच्छी दया का पालन कर रहे हो, अच्छे दान आदि क्रियाओं में लगे हो लेकिन फिर भी भीतर का मिथ्यात्व अगर है तो उसके कारण से भोगभूमि के मनुष्य बन जाते हैं। भोग भूमि में भी वह सुख की प्राप्ति करते हैं और इस तरह के मनुष्य बन करके वह भोग भूमि में भी सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकते हैं अथवा स्वर्गों में जाकर भी सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन स्वभाव से मृदु होने के कारण से उन्हें नरक आयु, तिर्यंच आयु का बंध नहीं होता। ये प्रशस्त आयु कही जाती हैं- देव आयु, मनुष्य आयु तो इनका ही वह बंध करता है। यह जो है मनुष्य आयु के कारण यहाँ पर पूर्ण बता दिए गए।